प्रतिष्ठित रोजगार का श्रम बाजार :–

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार श्रम बाजार सदैव संतुलन में होगा और संतुलन ही स्थिति में पूर्ण रोजगार होगी ! क्लासिकी विचारधारा का यह मानना कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के बिना पूर्ण रोजगार की प्राप्ति नहीं हो सकती है मजदूरी कीमत लोचशीलता दी हुई होने पर आर्थिक प्रणाली में स्वयं शक्तियां शक्तियां पाई जाती हैं तो पूर्ण रोजगार कायम रखने की प्रवृत्ति रहती हैं उसी स्तर पर उत्पादन भी होता है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री यह समझते थे कि यदि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में कीमत प्रणाली को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दिया जाए तो देश में पूर्ण रोजगार होने की प्रवृत्ति होती है प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री समझते थे कि पूर्ण रोजगार के स्तर से जो उतार चढ़ाव होते हैं वे कीमत प्रणाली के कार्य करने के फलस्वरूप स्वयं दूर हो जाते हैं।

श्रम की मांग :–

श्रम की मांग श्रमिको के सीमान्त भौतिक उत्पादन (MPP_L) पर निर्भर करेगा , अतः श्रम की मांग नियोक्त करता है ! यह मांग एक व्युत्पन्न मांग होती है उत्पादक या नियोक्ता का संतुलन तब होगा जब $W = MPP_L$ हो

यदि $W > MPP_L \longrightarrow$ उत्पादक को हानि होगी वह रोजगार में कटौती करेगा MPP_L बढेगा और संतुलन में $W = MPP_L$ हो जायेगा

यदि $W < MPP_L \longrightarrow$ उत्पादक को लाभ होगा रोजगार में वृद्धि करेगा MPP_L घटेगी और $W = MPP_L$ हो जायेगी !

$$\text{अतः } D_L = f(W)$$

अतः श्रम की मांग वास्तविक मजदूरी का फलन है!

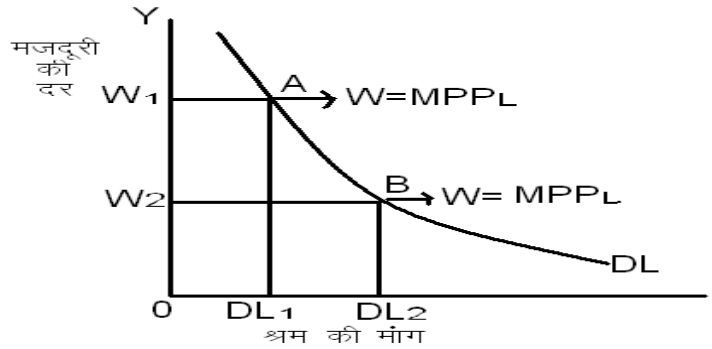

श्रम की पूर्ति :–

श्रम की पूर्ति श्रमिकों द्वारा की जाती है जो मजदूरी की दर से प्रभावित होगी!

श्रम की पूर्ति SL = F(W), मजदूरी की दर और श्रम की पूर्ति के बीच धनात्मक रूप में सम्बन्धित होगा!

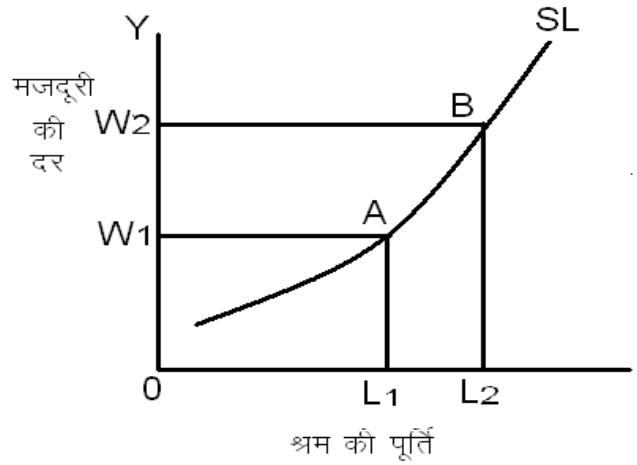

संतुलन की स्थिति

$D_L = S_L \rightarrow W$ *

$D_L > S_L \rightarrow$ मजदूरी बढेगा और मांग में कमी तथा पूर्ति में वृद्धि होगी जब तक कि $D_L = S_L$ न हो !

$D_L < S_L \rightarrow$ मजदूरी घटेगा , मांग में वृद्धि , पूर्ति में कमी जब तक $D_L = S_L$ न हो जाये !

संतुलन की स्थिति में पूर्ण रोजगार स्थापित होगा और पूर्ण रोजगार सें सम्बन्धित उत्पादन पूर्ण रोजगारीय होगा ! पूर्ण रोजगार की स्थिति में उत्पादन वक्र पूर्णतया बेलोच होगा !

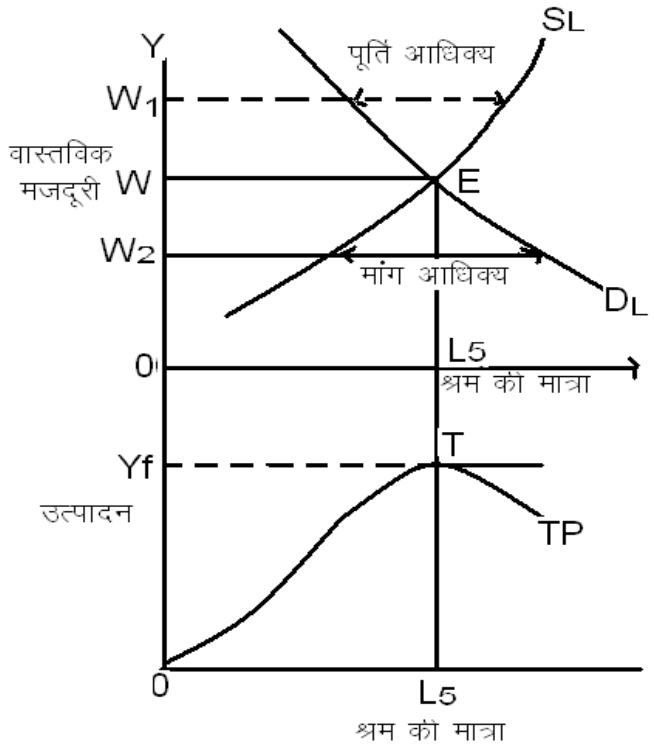

रेखाचित्र में OL_5 पूर्ण रोजगार का स्तर है OW निर्धारित मजदूरी हैं और बिन्दु E पर संतुलन की स्थिति तथा उत्पादन वक्र के T बिन्दु पर पूर्ण रोजगारीय उत्पादन है !अर्थात संतुलन के साथ ही पूर्ण रोजगार की स्थिति है ! यदि संतुलन में विचलनशीलता आती है तो मजदूरी इतनी लोचशील हो जायेगी जिससे कि पुनः श्रम बाजार संतुलन को प्राप्त कर जायेगा !